कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 3 खंड: 2 फरवरी 15-21, 2015

कपास पर्ण कुंचन रोग, गुलाबी सूंडी एवं उच्च घनत्व रोपण प्रणाली पर समीक्षा बैठक का आयोजन

डॉ.जे.एस.संधु, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) की अध्यक्षता में कपास पर्ण कुंचन रोग (सी.एल.सी.यू.डी), गुलाबी सूंडी प्रबंधन (पी.बी.एम) और उच्च घनत्व रोपण प्रणाली (एच.डी.पी.एस) के कार्य योजना को अंतिम रूप देने के लिए दि. 21.2.2015 को समीक्षा बैठक आयोजित की गई । डॉ. संध्या क्रांति ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और दर्शकों के लिए डॉ.जे.एस.संधु का परिचय कराया। डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं ने बैठक के महत्व को कपास पर्ण कुंचन रोग, गुलाबी सूंडी प्रबंधन और उच्च घनत्व रोपण प्रणाली के कई मुद्दों को हल करने की आवश्यकता के रुप में बल दिया ।

पहले सत्र कपास के पर्ण कुंचन रोग पर में डॉ.जे.एस.संधु, उप महानिदेशक (फ.वि.) की अध्यक्षता में किया गया था । उनके परिचयात्मक भाषण में उपमहानिदेशक ने बीज की गुणवत्ता और स्थिरता के महत्व की जरूरत पर बल दिया । डॉ. प्रकाश ने पूर्व-जारी एवं जारी किए गये बीटी संकर की मूल्यांकन रिपोर्ट प्रस्तुत किया । डॉ. नंदिनी गोक्टे नार्केडकर प्रधान वैज्ञानिक पहले सत्र के लिए रेपोटियेर थीं । उपमहानिदेशक ने प्रविष्टियों की संख्या सीमित किया जाने पर बल दिया । किसी भी बीज कंपनी द्वारा प्रस्तुत संकर की संख्या पर सीमित होना चाहिए । उन्होंने कहा कि पुराने संकर हर साल वापस लिया जाना चाहिए एवं हर तीन साल नई संकर ले आने के बारे में बीज कंपनियों सरकार को सूचित किया जाना चाहिए । उपमहानिदेशक ने यह भी कहा कि बीटी संकर के डीएनए फिंगर प्रिंटिंग होना आवश्यक है ताकि पुराने संकर नए रूप में पुनर्नवीनीकरण नहीं किया जा सकता । डॉ. क्रांति ने उल्लेख किया कि समय पर बुआई करना कीट और रोग प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण है ।

डॉ.राजु बार्वाल, प्रबंध निदेशक, माईको, द्वारा गुलाबी सूंडी प्रबंधन पर दूसरे सत्र की अध्यक्षता की गयी । डॉ.के.एस.मोहन, सलाहकार, मोनसेंटो इंडिया ने 'रिफ्यूज थैला के परिणाम', परीक्षणों एवं सिफारिशों पर भाषण प्रस्तुत किया । संरचित रिफ्यूज रोपण बीटी प्रौद्योगिकी को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है । मगर, किसानों इसे अपनाने को तैयार नहीं हैं । इस प्रकार समय के दौरान प्रतिरोध की समस्या अनिवार्य है । उन्होंने कहा कि मोनसेंटो पिछले तीन साल विभिन्न स्थानों पर क्षेत्र परीक्षणों का आयोजन स्वामित्व होकर या के.क.अ.सं, के सहयोग के साथ किया । परीक्षण के निष्कर्षों संकेत दिया हैं कि समकक्ष संकर की आयसोजेनिक लाइन के साथ किया 5% रेफ्यूजी बैग (आर.आई.बी) द्वारा उपज में कोई महत्वपूर्ण कमी नहीं थी । हालांकि, उन्होंने आगाह किया और कहा कि आर.आई.बी बीज को लागू करते समय कंपनियों को कीटनाशकों का छिड़काव और समकक्ष गैर बीटी संकर की उपलब्धता को संबंध में किसानों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी का कार्य करना चाहिए । उन्होंने कहा कि डोजियर के प्रस्ताव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद / जी.ई.ए.सी की मंजूरी के लिए प्रस्तुत किया गया है और कार्यान्वयन पर राजपत्र अधिसूचना की प्रतीक्षा किया जा रहा है । इस सत्र के लिए डॉ. विश्लेष नगरारे, वरिष्ठ वैज्ञानिक रेपोटियेर थे।

कपास पर्ण कुंचन रोग, गुलाबी सूंडी एवं उच्च घनत्व रोपण प्रणाली पर समीक्षा बैठक का आयोजन

तीसरे सत्र उच्च घनत्व रोपण प्रणाली पर उपमहानिदेशक (सी.एस) डा. जे.एस संधू की अध्यक्षता में किया गया था । उनके परिचयात्मक टिप्पणी में डा. संधू ने कहा कि एच.डी.पी.एस. पिछले तीन साल से किसान की प्रायोगिक क्षेत्रों पर एवं भागीदारी प्रकार में सार्वजनिक क्षेत्र और बीज उद्योग द्वारा परीक्षण किया गया था और बहुत ही विश्वास विकसित किया गया है । इस सत्र में पांच प्रस्तुतियों थे । पहली प्रस्तुति डॉ. एम.वी.वेणुगोपालन द्वारा की गयी, जिसमें उन्होंने के.क.अ.सं, एवं ए.आय.सी.सी.आय.पी के भागीदारों द्वारा वर्ष 2010-11 से अब तक लिए गये अनुसंधान परियोजनाओं की एक अंतर्दृष्टि प्रस्तुत किया । डॉ. ब्लेज डिसौसा, प्रधान, फसल उत्पादन प्रभाग द्वारा दूसरी प्रस्तुति दी गयी । यह प्रस्तुति राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एन.एफ.एस.एम) के परिणामों पर थी । वर्ष 2012-13 और 2014-5 में विदर्भ और अन्य क्षेत्रों में किए गए ऑन-फार्म परीक्षण का अवलोकन भी प्रस्तुत किए गए । डॉ.रामसामी, प्रबंध निदेशक, रासी सीड्स, ने महाराष्ट्र एवं दक्षिणी भारत के बी.टी. संकर हेतु एच.डी.पी.एस परीक्षणों पर भाषण दिया । डॉ.रितेश मिश्रा, माईको एवं डॉ.अश्विन काशीकर, अंकूर सीड्स निजी लिमिटोड ने मौखिक रुप में माईको एवं अंकूर सीड्स द्वारा किए गयो परीक्षणों के संबंध में सभा को विवरण दिया । डॉ.विपिन डागोंकर, बैयर इन्डिया लिमिटेड ने पी.जी.आर के प्रतिक्रिया हर जीनोटाइप हेतु अलग होता है और अधिक उत्पादकता के लिए ओटाई प्रतिशत वृद्धि की जरूरत है । सभा को सूचित किया गया था कि ब्राजील के ओटाई प्रतिशत 46 % थी जो भारतीय कपास की तुलना में 12% अधिक है ।

उपमहानिदेशक द्वारा अनुमान लगाया गया कि पिछले पांच वर्षों में प्रयोगात्मक परिणामों के रूप में एवं पिछले तीन वर्षों में किसानों की खेती में के.क.अ.सं और बीज कंपनियों द्वारा किए गये व्यापक क्षेत्र परीक्षणों से एच.डी.पी.एस के संकल्पना अच्छा है । उन्होंने सुझाव दिया कि एच.डी.पी.एस परीक्षणों की सफलता या असफलता पर प्रत्येक क्षेत्र विश्लेषण किया जाएँ । बैठक के उपरांत हुआ सत्र में के.क.अ.सं, नागपुर के वैज्ञानिकों ने उप-महानिदेशक के साथ परस्पर बातचीत की ।

कपास पर्ण कुंचन रोग पर बैटक का आयोजन

एक विशेष बैठक दि.18.2.2015 को प्रविष्टियों को अंतिम रूप देने के उद्देश्य में मानकों पर चर्चा करने एवं ए.आय.सी.सी.आय.पी के जारी किए गये एवं पूर्व-जारी किए गये बी.टी.संकर किस्मों के कपास पर्ण कुंचन रोग के विरुद्ध के परिणाम को सहिष्णुता के आधार पर 2015-16 के दौरान खेती के लिए प्रस्तुत करने हेतु के.क.अ.सं., नागपुर में आयोजित की गयी । डॉ. सी.डी.मायी, पूर्व एएसआरबी के अदयक्ष की अध्यक्षता में की गयी थी । डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, डॉ.अ.हि.प्रकाश, (परियोजना समन्वयक), डॉ.डी.मोगा, (अध्यक्ष, के.क.अ.सं, सिर्सा), सभी के.क.अ.सं, के प्रमुखों एवं एन.एस.ए.आय के 8 प्रतिनिधियों बैठक में उपस्थित थे ।. डॉ. क्रांति ने निगरानी टीम के दि.8-12, सितंबर, 2014 के दौरान सभी पांच का मूल्यांकन केंद्रों का दौरा करने के संबंध में अवगत कराया और प्रयोगों के आयोजन के साथ संतुष्ट हैं । उन्होंने परीक्षणों के उत्कृष्ट आयोजन विशेष रूप से सफेद मक्की इन्सिडेन्स के दर्ज एवं कपास पर्ण कुंचन रोग के प्रगति के लिए केन्द्रों की सराहना की जो 150 प्रविष्टियों दो अलग-अलग तारीखों में बोये जाने से थकाऊ दिखाई दिया । डॉ. मायी, अध्यक्ष भी उनके परिचयात्मक टिप्पणी के दौरान कपास पर्ण कुंचन रोग परीक्षणों के कार्यान्वयन में संतोष व्यक्त किया । उन्होंने व्यक्त किया कि प्रविष्टियों की इतनी बड़ी संख्या विशेष रूप से परिणामों की व्याख्या के दौरान संभालना मुश्किल थे । अध्यक्ष ने निदेशक, के.क.अ.सं, से किए इन प्रविष्टियों के अनिर्मित डेटा और विश्लेषण के तरीकों पेश किया जाएँ । डॉ. क्रांति ने डेटा एवं स्क्रीनिंग के लिए अनुसरण करने का प्रोटोकॉल प्रस्तुत किया । बैठक डॉ.अ.हि.प्रकाश (प.स) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुई ।

आय.आर.एम.-एच.डी.पी.एस पर बैठक का आयोजन

आय.आर.एम.-एच.डी.पी.एस पर एक बैठक दि.19.2.2015 को के.क.,अ.सं, नागपुर में आयोजिय की गयी । एच.डी.पी.एस कार्यक्रम के तहत वर्ष के दौरान किए गए कार्यों, विशेष रुप में उत्तर भारत, मध्य भारत और दक्षिण भारत के लिए विस्तार से चर्चा की गई । डॉ. ऋषि कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा एवं डॉ. धाराजोति, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर ने क्रमानुसार उत्तर भारत और दक्षिण भारत के लिए रिपोर्ट प्रस्तुत किया । परियोजना सहयोगियों ने आने वाले मौसम हेतु बीज की समय पर उपलब्धता पर चिंता व्यक्त की । किसानों को बुवाई के लिए बीज को बनाए रखने की सलाह दी गई है । किसानों को इस कम इनपुट लाभकारी के रूप से उपलप्ध इस प्रौद्योगिकी से उत्साहित हैं । निर्देशक द्वारा विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में एच.डी.पी.एस के बीज उत्पादन को सभा से अवगत कराया गया ।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-3, खंड-2, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रॉड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com